14

पीछे को-और आगे को देखना

(8:1-7)

हम यीशु की याजकाई की श्रेष्ठता पर लेखक की चर्चा के केन्द्र में हैं। अध्याय 5 से 7 में लेखक ने मसीहियत की महा याजकाई के *अधिकारी* अर्थात यीशु की चर्चा की। अध्याय 9 और 10 में उसने मसीहियत की महा याजकाई की *सेवा* की चर्चा की। अध्याय 8 परिवर्तन का अध्याय है। यह पीछे को देखते हुए पहले भाग को समेट देता है। यह आगे को देखते हुए दूसरे भाग का परिचय भी देता है।

पीछे को देखना (8:1)

कल्पना करें कि आप कई रातों तक एक लम्बे समय तक किसी समूह को एक कहानी बता रहे हैं। प्रत्येक रात आप पिछली रातों की समीक्षा के साथ आरम्भ करेंगे: ''पिछली बार हमने कहानी में देखा था।'' इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अध्याय 8 का आरम्भ इसी प्रकार से किया। KJV में है ''अब उन बातों का जो हम कह रहे हैं, का सार यह है।''

अध्याय 7 में लेखक ने यह समझाते हुए कि यीशु उत्तम महायाजक क्यों है एक के बाद एक तर्क दिया। ये सभी तर्क 8:1 में ''ऐसा'' शब्द में हैं: ''हमारा ऐसा महायाजक है।'' यानी हमारा ऐसा महायाजक है जैसे महा याजक की बात अध्याय 7 में की गई है। अध्याय 8 के आरम्भ में लेखक ने अपने तर्कों को चरम दिया। यीशु उत्तम महायाजक है (1) क्योंकि वह शाही महा याजक है और (2) क्योंकि वह *स्वर्ग में* सेवा करता है।

हमारे लिए, आयत 1 में सबसे महत्वपूर्ण शब्द शायद ''है'' है: ''हमारा ऐसा महायाजक है।'' यहूदियों के महायाजक होते *थे* यानी 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश तक एक के बाद एक महायाजक होते थे, परन्तु हमारा महा याजक *है* (वर्तमान काल)। हमारा महायाजक *हमेशा* रहेगा। इसलिए हमारी पहुंच परमेश्वर तक सदा रहेगी।[1]

आगे को देखना (8:2-7)

तम्बू (8:2-6क)

आयत 2 से आरम्भ करते हुए लेखक ने समझाया कि मसीही लोगों के पास एक उत्तम तम्बू है। उसकी विचारधारा कुछ इस प्रकार से आगे बढ़ती है:

(1) महायाजक के पास भेंट चढ़ाने को कुछ *और भेंट चढ़ाने की कोई जगह* होनी आवश्यक है (आयत 3)। यीशु द्वारा चढ़ाई गई ''कोई चीज़'' का वर्णन 7:27 में है और बाद में हम उस पर चर्चा करेंगे। इस संदर्भ में लेखक को *स्थान* की अधिक चिन्ता थी।

(2) यीशु पृथ्वी पर दो कारणों से बलिदान नहीं चढ़ा सकता था: वह पृथ्वी पर नहीं था (आयत 1) और पृथ्वी पर याजक पहले ही वह काम कर रहे थे (आयत 4)।

(3) परन्तु वह स्वर्ग में बलिदान चढ़ा सकता था। उसका तम्बू वहीं पर है (आयतें 1, 2)।

(4) स्वर्गीय तम्बू कई कारणों से मूसा द्वारा बनाए तम्बू (मन्दिर[2]) से बहुत श्रेष्ठ है। उदाहरण के लिए:

- मूसा द्वारा बनाया गया तम्बू केवल नकल और परछाईं था, बेशक उसे बनाने में बहुत ज़ोर लगाया गया था (आयत 5)।
- इसके अलावा मन्दिर के सम्बन्ध में किए जाने वाले बलिदान वास्तविक बलिदान के केवल प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब थे (आयतें 4, 5क)।
- *असली* मन्दिर स्वर्ग में प्रभु द्वारा बनाया गया है (आयत 2)।

(5) स्वर्गीय तम्बू के पृथ्वी के तम्बू (मन्दिर) से श्रेष्ठ होने का मुख्य कारण यह है कि वहां पर *बड़ा महा याजक* सेवा करता है (आयत 2)।[3] अनुवादित शब्द ''सेवक'' ''सेवक'' के लिए सामान्य शब्द नहीं है। इसके बजाय यह वह शब्द है जो अपने खर्च पर दूसरों के लिए काम करने का संकेत देता है।[4] दूसरों ने सेवा की है, पर यीशु को ''*बढ़कर* सेवा मिली है'' (आयत 6)।

वाचा (8:6, 7)

लेखक का मुख्य विषय उत्तम महायाजक के रूप में यीशु है, परन्तु उत्तम बलिदान, उत्तम तम्बू और उत्तम वाचा जैसे अन्य विषयों की बात भी होती रहती है। ये सभी उस सच्चाई से जुड़े हैं कि यीशु उत्तम महायाजक है।

- यदि यीशु एक उत्तम महायाजक है, तो उसके पास *उत्तम बलिदान* होना आवश्यक है, जो कि उसके पास है यानी अपना आप।
- यदि यीशु उत्तम याजक है तो उसके पास *सेवा करने के लिए उत्तम स्थान* होना आवश्यक है, जो कि उसके पास है यानी स्वर्ग में असली मन्दिर।
- यदि यीशु उत्तम महायाजक है तो उसके पास *उत्तम वाचा* का होना आवश्यक है, जो कि उसके पास है। पुरानी वाचा अर्थात यहूदी वाचा लेवीय याजकाई से बेजोड़ ढंग से जुड़ी थी पर यीशु नई वाचा देता है जो पापों की सचमुच में क्षमा देती है।

उत्तम वाचा का विचार अध्याय 8 के अन्तिम भाग में विकसित होता है। पिछले अध्याय में यह देखा गया था कि ''यीशु एक *उत्तम वाचा* का जामिन ठहरा'' है (7:22)। अध्याय 8 में लेखक ने कहा:

> पर उस [यीशु] को उसकी सेवकाई से बढ़कर मिली, क्योंकि वह और भी *उत्तम वाचा* का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है। क्योंकि यदि वह पहली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता (8:6, 7)।

लेखक ने यह क्यों कहा कि यीशु की वाचा *उत्तम* है?

(1) *क्योंकि यीशु इसका मध्यस्थ है* (आयत 6क)। लेखक यीशु की ओर ही वापस आता है। पुरानी वाचा में लोगों और परमेश्वर के बीच में एक कमज़ोर महायाजक खड़ा था। नई वाचा में, हमारे और परमेश्वर के बीच हमारा सिद्ध महायाजक मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)।

(2) क्योंकि नई वाचा में उत्तम प्रतिज्ञाएं हैं (आयत 6ख)। कई ''उत्तम प्रतिज्ञाएं'' ध्यान में आती हैं,[5] जिनमें हमारे पापों की पूर्ण और अन्तिम क्षमा भी है। इनमें से कुछ उत्तम प्रतिज्ञाएं अध्याय 8 के अन्तिम भाग में दी गई हैं।

(3) *क्योंकि नई वाचा उसे प्राप्त करती है जो पहली वाचा से नहीं हो पाया।* आयत 7 पहली बार पढ़ने पर आप ''दोष'' शब्द सुनकर चौंक सकते हैं। लेख यह क्यों कह रहा था कि पुरानी वाचा दोष वाली है? पढ़ते रहें। आयत 8 आरम्भ होती है, ''वह *उन* पर दोष लगाकर कहता है ...।'' दोष वाचा में नहीं बल्कि लोगों में था। आयत 9 को ध्यान से देखें: ''क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे।'' लोगों ने समझौते के अपने योगदान को पूरा नहीं किया।

लेखक यह मानकर चला कि पत्री को पढ़ने वाले कुछ लोगों को नई वाचा के उत्तम होने पर संदेह होगा। इसलिए उसने यह दिखाने के लिए कि पुराने नियम में भी बताया गया था कि पहली वाचा अपने लोगों के साथ परमेश्वर का अन्तिम प्रबन्ध नहीं था, यिर्मयाह 31:31-34 से उद्धृत किया। यह ऐसी महत्वपूर्ण सच्चाई है कि हम इसे अगले एक पाठ में चर्चा के लिए छोड़ देते हैं। अभी के लिए मैं एक आसान सी समीक्षा देना चाहता हूं कि यीशु ने हमें एक उत्तम वाचा दी है जो हमारे मनों को आश्वासन देती है।[6]

मसीहियत उत्तम क्यों है	
जो हमारे पास है	**जो यह हमें देता है**
एक उत्तम महायाजक	**हमारे परमेश्वर तक पहुंच**
एक उत्तम तम्बू	**हमारे सेवक के रूप में यीशु**
एक उत्तम वाचा	**हमारे मनों को आश्वासन**

हमें एक उत्तम महायाजक, एक उत्तम तम्बू और एक उत्तम वाचा मिली है। इसमें हम जोड़ सकते हैं कि हमें एक उत्तम बलिदान मिला है, जैसा कि आयत 3 में संकेत मिलता है; और हमारी उत्तम प्रतिज्ञाओं के बारे में और बहुत कुछ कहा जा सकता है (आयत 6)। अध्याय 8 की अपनी चर्चा को हम अगले पाठ ''नई वाचा'' में जारी रखेंगे।

टिप्पणियां

[1]''मसीहियत उत्तम क्यों है'' चार्ट देखें। [2]तम्बू पर चर्चा अध्याय 9 के सम्बन्ध में की जाएगी। इस पुस्तक में कहीं और तम्बू का रेखाचित्र देखें। [3]''मसीहियत उत्तम क्यों है'' पर चार्ट देखें। [4]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 154. [5]क्लास में चर्चा के लिए यह अच्छा समय होगा कि नई वाचा की कुछ ''उत्तम प्रतिज्ञाएं'' क्या हैं? [6]फिर से, चार्ट को देखें।